



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 57]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 15, 1999/फाल्गुन 24, 1920

No. 57]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 15, 1999/PHALGUNA 24, 1920

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 मार्च, 1999

अंतिम निष्कर्ष

**विषय :—** चीन जनवादी गणराज्य से सीट्रिक एसिड के आयात के संबंध में पाटनरोधी जाँच—अंतिम निष्कर्ष

सं. 29/1/97/ए. डी. डी.—1995 में यथासंशोधित, सोमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसके सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति का निर्धारण)। नियमावली, 1995 का पालन करते हुए :—

**क. पद्धति**

1. आरंभिक निष्कर्षों के बाद नीचे दी गयी पद्धति का पालन किया गया है :—

(क) पदनामित अधिकारी (जिसे इसमें इसके बाद अधिकारी कहा गया है) ने चीन जनवादी गणराज्य से सीट्रिक एसिड के आयात के संबंध में पाटनरोधी जाँच संबंधी अधिसूचना, तारीख 20-10-98 द्वारा आरंभिक निष्कर्ष अधिसूचित किये और हितबद्ध पार्टियों से अपने विचार लिखित रूप में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर देने के लिए कहा।

(ख) प्राधिकारी ने आरंभिक निष्कर्षों की एक प्रति उन ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को भेजी जिनसे अपने विचार आरंभिक निष्कर्षों पर, पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर देने का अनुरोध किया गया था।

(ग) प्राधिकारी ने नई दिल्ली में चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को आरंभिक निष्कर्षों की एक

प्रति यह अनुरोध करने हुए भेजी कि वे नियतकों तथा अन्य हितबद पार्टियों से आरंभिक निष्कर्षों पर अपने विचार देने के लिए कहें ।

§घ§ अधिकारी ने सभी हितबद पार्टियों को अपने विचार मौखिक रूप से देने का अवसर 2.12.98 को दिया । अपने विचार मौखिक रूप से देने वाली सभी पार्टियों से, अपने मौखिक रूप से दिए गए विचारों को लिखित रूप में देने का अनुरोध किया गया । पार्टियों से यह भी अनुरोध किया गया कि वे विपक्षी पार्टियों द्वारा व्यक्त किये गए विचारों की प्रतियाँ ले लें और उनके उत्तर यादे कोई हों, दे दें ।

§ङ. § अधिकारी ने एक पब्लिक फाईल भी उपलब्ध कराई जिसमें विभिन्न हितबद पार्टियों द्वारा दिए गये साक्ष्यों और दिए गए तर्कों के अ-गोपनीय रूप शामिल थे । जिन पार्टियों ने इस फाईल को देखने के लिए लिखित रूप में अनुरोध किया था, उन्हें यह पब्लिक फाईल देखने की अनुमति दी गयी ।

§च§ आरंभिक निष्कर्षों की घोषणा से पहले हितबद पार्टियों द्वारा दिए गए तर्क, जो अधिसूचित आरंभिक निष्कर्षों में दिए गए हैं, संक्षिप्त की दृष्टि से यहां दोहराया नहीं जा रहा है । तथापि, हितबद पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों को आरंभिक निष्कर्षों और/या इन निष्कर्षों में उचित रूप से लिया गया है ।

§छ§ उपरोक्त नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए आवश्यक समझे गए अनिवार्य तथ्य/आधार, ज्ञात हितबद पार्टियों को बताए गए थे और इन पर प्राप्त टिप्पणियों को इन निष्कर्षों में उपयुक्त रूप से लिया गया है ।

§ज§ \*\*\*\* यह चिन्ह इस अधिसूचना में, हितबद पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गयी सूचना का द्योतक है और नियमों के अधीन अधिकारी द्वारा इसे ऐसा माना गया है ।

## ख. विचाराधीन उत्पाद

2. सम्बद्ध उत्पाद, जैसा कि आरंभिक निष्कर्षों के पैरा पाँच में निर्दिष्ट है, चीन/गणराज्य ~~जनगद~~ मूल का या वहां से निर्यातित सीट्रिक एसिड है । यह उत्पाद कस्टम टैरिफ शीट 2918.14 के अन्तर्गत वर्गीकृत है ।

आरंभिक निष्कर्षों की अधिसूचना के बाद विचाराधीन उत्पाद के मामले में हितबद्ध पार्टियों द्वारा कोई तर्क नहीं उठाया गया और इस प्रकार अधिकारी इस संबंध में आरंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करता है।

#### ग. समान वस्तु

-----

3. अधिकारी ने आरंभिक निष्कर्षों के पैरा 6 में माना कि वादी द्वारा उत्पादित सीट्रिक एसिड और चीनी गणराज्य से निर्यातित सीट्रिक एसिड, आपस में अदल-बदल कर प्रयोग किये जा सकते हैं और इस प्रकार तकनीकी एवं वाणिज्यिक दृष्टि से एक-दूसरे के स्थान पर काम आ सकते हैं और वे नियमों के अर्थों में 'समान वस्तुएँ' हैं।

आरंभिक निष्कर्षों से संबंधित अधिसूचना के बाद इस संबंध में किसी भी हितबद्ध पार्टी ने कोई मुद्दा नहीं उठाया है, अतः अधिकारी इस संबंध में आरंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं।

#### घ. स्वदेशी उद्योग

-----

4. स्वदेशी उद्योग की ओर से मै. सिटराजिया बायोकेमिकल्स लिमिटेड, नैवलो हाउस, जेएन हरदिया मार्ग, बेलार्ड एस्टेट, मुम्बई द्वारा याचिका दायर की गयी है। अधिकारी द्वारा आरंभिक निष्कर्षों के पैरा 7 में यह देखा गया कि उद्योग के कुल उत्पादन में वादी का हिस्सा लगभग 87 प्रतिशत है और इस प्रकार नियमों के अनुसार, स्वदेशी उद्योग की ओर से वादी के पास याचिका दायर करने का आधार है।

आरंभिक निष्कर्षों संबंधी अधिसूचना के बाद किसी भी हितबद्ध पार्टी ने कोई मुद्दा नहीं उठाया है और इस प्रकार अधिकारी इस संबंध में आरंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करता है।

#### ड. पाटन

-----

5. पाटन संबंधी नियमों पर आरंभिक निष्कर्षों में पहले ही चर्चा कर ली गयी है। चीन जनवादी गणराज्य से किसी भी निर्यातक ने, आरंभिक निष्कर्षों की अधिसूचना जारी होने से पहले

कोई भी सूचना नहीं दी। अधिकारी नोट करते हैं कि चीनी गणराज्य से किसी भी निर्यातक ने और आगे सूचना नहीं दी है या आरंभिक निष्कर्षों में अधिकारी द्वारा आकलित पाटन मार्जिनों पर विवाद किया है।

#### आयातक द्वारा दिया गया तर्क

6. वादी ने उत्पादन की निर्मित लागत का हिसाब लगाने के लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए हैं, अतः इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं की जा सकती। चीनी निर्यातक के बीचक तारीख 15.6.98 के आधार पर एवं चीन में मूल्य संबंधी तारीख 11.11.98 की सूचना के आधार पर कोई पाटन नहीं है। निर्यात मूल्य के संबंध में कोई साक्ष्य नहीं है।

#### अधिकारी की स्थिति

- 6.1 क॥ प्राधिकारी ने देखा कि किसी भी चीनी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया और सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य, पाटनमार्जिन आदि के विषय में जांच के दौरान कोई सूचना नहीं दी। आरंभिक निष्कर्षों की अधिसूचना के बाद भी, प्राधिकारी द्वारा विचार किये जाने के लिए किसी भी चीनी निर्यातक ने कोई सूचना नहीं दी। अतः प्राधिकारी ने चीनी निर्यातकों को अ-सहयोगी निर्यातक माना है और प्राधिकारी के पास सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर ही कार्यवाही की है।

आरंभिक निष्कर्षों की अधिसूचना के पैरा 8 में प्राधिकारी द्वारा यह कहा गया कि वादी ने, उत्पादन की निर्मित लागत का हिसाब लगाने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं दिए हैं और इसीलिए इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं की जा सकती। आगे और भी यह कहा गया कि किसी भी हितबद्ध पार्टी जैसे निर्यातक, आयातक ने आकलन की पद्धति का विरोध नहीं किया या लागत का निश्चय करने में प्रयुक्त तथ्यात्मक आकड़ों का विरोध किया है। अतः इन परिस्थितियों में प्राधिकारी को सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर ही निर्भर रहना पड़ा और तदनुसार निर्मित लागत का निश्चय करना पड़ रहा है।

यह देखा गया कि आरंभिक निष्कर्षों की अधिसूचना के बाद किसी भी चीनी निर्यातक ने न तो कोई उत्तर दिया है और न ही पदनामित प्राधिकारी के किसी भी निष्कर्ष पर विरोध किया है। यद्यपि इसके लिए उन्हें पर्याप्त अवसर दिया गया था। किसी भी चीनी निर्यातक ने मौखिक सुनवाई में अपने मामलों को प्रस्तुत नहीं किया। प्राधिकारी ने पाया कि आयातकों द्वारा दी गयी सूचना कुछ बीजकों/निर्धों पर आधारित है जो 15.6.98 तथा 11.11.98 की तारीखों की हैं। ये तारीखें जाँच की अवधि के बाद की हैं जो अप्रैल, 96 से जुलाई, 97 तक की थीं, अतः इन पर विचार नहीं किया जा सकता। और भी, प्राधिकारी कुछ बीजकों या अन्य इसी प्रकार की सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का निश्चयन नहीं कर सकता क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि बिस्की के बिन्दु पर मूल्य उत्पादक के हैं या व्यापारी के, वे फैक्टरी-स्तर के हैं या अन्यथा, इसमें कितनी उधार अवधि शामिल है, व्यापार के स्तर और शर्तें क्या हैं एवं क्या वे व्यापार के सामान्य तरीके में शामिल हैं या नहीं। इस सीमा तक प्राधिकारी सूचना को अधूरी मानता है और इसलिए अधूरी सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का हिसाब नहीं लगाया जा सकता। यह भी देखा गया कि आयातक ने अब कुछ बिल ऑफ फ्रट्रिज प्रस्तुत किये हैं जो अक्टूबर 98 तथा नवम्बर 98 के हैं और तदनुसार निर्यात मूल्य का हिसाब लगाने का अनुरोध किया है। प्राधिकारी ने देखा है कि ये बिल ऑफ फ्रट्रिज, जाँच अवधि के बाहर की अवधि से संबंधित हैं। अतः इन पर विचार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार प्राधिकारी निर्यात मूल्य के बारे में भी सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर विश्वास करने के लिए विवश है और आरंभिक निष्कर्षों के पैरा 9 में यथाआकलित निर्यात मूल्य 8 फ़ैक्टरी स्तर पर 81.25 प्रतिशत पर पाटनमार्जिन की पुष्टि करता है।

#### च. क्षति तथा कारणात्मक संबंध

##### 7. §18 खादी द्वारा दिया गया तर्क

- मै. भारत स्वर्च इंडस्ट्रिज लि., जिन्होंने सीट्रिक एसिड का उत्पादन शुरू किया है, के पास अन्तर्राष्ट्रीय आकार का संयंत्र है एवं उत्पादन के सर्वाधिक स्तर पर उनकी लागत, सीटरजीया की लागत से अधिक है जिससे इस बातकी पुष्टि होती है कि बाद वाला अपना संयंत्र कुशलता के साथ चला रहा है।

- भारत स्टार्च को मिला कर, इण्डियन सीट्रिक एसिड उद्योग अर्थात् सिटरजिया की कुल उत्पादन क्षमता, स्वदेशी आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त से कहीं अधिक है।
- विभिन्न आर्थिक पैमाने बताते हैं कि स्वदेशी उद्योग को क्षति हुई है।

**ख) आयातक द्वारा दिए गए तर्क**

स्वदेशी उद्योग को, निम्नलिखित तथ्यों के कारण कोई क्षति नहीं हुई है :-

- जांच अवधि के दौरान चीन से आयात 85% थे, जबकि पहले 97-98% थे।
- स्प्लाई के अन्य स्रोत, यदि चीन के मूल्यों से तुलना की जाए, तो लगभग उसी मूल्य पर माल बेच रहे थे।
- भारत स्टार्च इण्डस्ट्रीज लि० ने जांच की अवधि के दौरान माल उत्पादित किया और बेचा है जिसे अधिकारी ने नहीं माना है।
- मै० भारत स्टार्च लि० के प्रवेश के कारण बिक्रियां मंदी रही हैं।
- जांच के उत्तरार्ध में आयातों में वृद्धि का कारण सीजन होने की बात रही है।
- उत्पाद एवं क्षमता उपयोगिता, जांच अवधि के दौरान बेहतर थे।
- वादी के मामले में उत्पादन लागत ऊँची है क्योंकि संयंत्र की उत्पादन क्षमता 6250 मी.टन प्रतिवर्ष की है। सीट्रिक एसिड संयंत्र का न्यूनतम किफायती आकार 20000 मी.टन प्रति वर्ष के लगभग का होगा।
- 20000 मी.टन प्रतिवर्ष की क्षमता के साथ मै० भारत स्टार्च लि० के चालू होने से स्वदेशी उद्योग का विकास नहीं रुक गया है।
- मांग तथा पूर्ति में अंतर है। स्वदेशी उद्योग से की गई स्प्लाई, मांग को पूरा नहीं कर सकती।

- लाभ मार्जिन में क्षरण, शीरे एवं बिजली प्रभार में भारी वृद्धि एवं आयात शुल्क के 40% से घटकर 30% हो जाने के कारण है ।
- पाटन-रोधी सीमा शुल्क लगाना स्वदेशी उद्योग के लिए अहितकर होगा ।
- वादी अपनी अकुशलताओं के कारण अपनी लागत पर नियंत्रण नहीं रख सके । वादी का उत्पादन संयंत्र बहुत पुराना है । मानक मानदण्डों की तुलना में मै0 सिटरजिया का उत्पादन परिमाण काफी कम है ।
- अंतिम स्टॉक को रोक लेने के कारण वादी को कोई क्षति नहीं है ।
- आरोपित आयात तथा क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है ।
- वादी सीट्रिक एसिड का एकाधिकारी उत्पादक है और प्रतिबंधात्मक / अनैतिक व्यापार क्रियाओं को करने के लिए ज्ञात है ।

### अधिकारी की स्थिति

- 7 (क) क्षति तथा क्षति के मापकों को नियंत्रित करने वाले नियमों पर, आरंभिक निष्कर्षों में चर्चा हो चुकी है जिसमें यह ठहराया गया था कि स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है । अधिकारी का मानना है कि स्वदेशी उद्योग से संबंधित सभी आर्थिक मापकों के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे क्षति बताएँ और ना ही यह कि एक या विभिन्न आर्थिक मापक, स्वदेशी उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के संबंध में निर्णयात्मक मार्ग-दर्शन दें । स्वदेशी उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जाँच में, सभी संबंधित आर्थिक कारकों का मूल्यांकन शामिल है । सभी संबंधित कारकों का संचित आकलन ही यह बता सकता है कि स्वदेशी उद्योग को आर्थिक हानि हुई है या नहीं । यदि स्वदेशी उद्योग कुशलता के अधिकतम स्तर से नीचे कार्य करता है तो इसका प्रभाव समाप्त हो जाएगा, क्योंकि स्वदेशी उद्योग को क्षति का आकलन, उत्पादन की अधिकतम लागत एवं सामान्यतः स्वीकार की गई लेखा पद्धतियों के आधार पर, विषयगत माल को बनाने एवं बेचने की लागत पर किया जाता है । अधिकारी, स्वदेशी उद्योग को अपनी अकुशलता, यदि कोई है, का फायदा उठाने और इसे प्रयोक्ता उद्योग को दे देने की अनुमति नहीं देता । पाटनरोधी जाँच, नियमानुसार की जाती है और पाटनरोधी सीमा-शुल्क की सिफारिश की जाती है जो क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी ।

जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि सप्लाई के अन्य स्रोत, चीन, मूल्यों की तुलना करने पर उसी मूल्य पर माल बेच रहे हैं, प्राधिकारी का विचार है कि उन्हें पाठित माल नहीं माना जा सकता जैसा कि वादी ने आरोप लगाया है ।

मे. भारत स्टील इंडस्ट्रीज लि. तथा वादी की लगतों की तुलना के संबंध में अधिकारी का विचार है कि इन कम्पनियों ने भिन्न कच्चे माल का प्रयोग किया है और इसलिए लागत की तुलना करना उचित नहीं होगा । और भी, मे. भारत स्टील का संयंत्र पूरी तरह काम करने लायक नहीं है और इसलिए भारत स्टील का उत्पादन के उच्चतर स्तर पर लागत डाटा आकलन वास्तविक के आधार पर नहीं है । अन्यथा भी वादी, क्षति के निर्धारण के प्रयोजन के लिए, स्वदेशी उद्योग के आधार की शर्त को पूरा करता है ।

इस तर्क के संबंध में कि मांग तथा पूर्ति में अन्तर है, प्राधिकारी का विचार है कि पाटनरोधी सीमाशुल्क लगाने की सिफारिश से आयातों की मात्रा किसी भी तरह से प्रतिबंधित नहीं होगी। पाटनरोधी सीमा शुल्क लगाने के बाद भी प्रयोक्ता उद्योग, माँग और पूर्ति के अन्तर, यदि कोई हो, को पाटने के लिए विषयगत माल का आयात कर सकता है। इसके अलावा इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि मैसर्स भारत स्टील इंडस्ट्रीज लि. 20000 मी.टन प्रतिवर्ष की संस्थापित क्षमता से सीट्रिक एसिड का उत्पादन करेगा जो भविष्य में सीट्रिक एसिड की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त होगा । प्राधिकारी ने आरंभिक निष्कर्षों के पैरा 20 में भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य संबंधित मुद्दों पर पहले ही चर्चा कर ली है जिसमें, अन्य बातों के साथ-साथ यह माना गया है कि सामान्यतः पाटनरोधी सीमा शुल्क का प्रयोजन पाटन को समाप्त करना है जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुंचाता है । इससे भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बनती है जो देश के सामान्य हित में है । अतः अधिकारी का मानना है कि पाटनरोधी सीमाशुल्क का लगाया जाना भारतीय उद्योग के हित के विरुद्ध नहीं है ।

## छ. अन्य मामले

### वादी द्वारा दिए गए तर्क

8. सीट्रिक एसिड के आयात पर पाटनरोधी सीमाशुल्क का हिसाब लगाने के लिए रु. 58925 प्रति मी.टन का फ्लोर मूल्य बहुत अधिक नीचा है । मानक मापकों तथा क्षमता उपभोग के अधिकतम स्तर की बजाय कच्चे माल के वास्तविक प्रयोग को ध्यान में लिया जाना चाहिए ।



### अधिकारी की स्थिति

8१क१ प्राधिकारी, उचित बिक्री मूल्य को, उत्पादन की अधिकतम लागत एवं सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों के आधार पर विषयगत माल को बनाने और बेचने की लागत के आधार पर मानता है ।

### आयातक द्वारा दिया गया तर्क

9. वास्तविक प्रयोक्ता अंश के हित को अनदेखा किया गया है । साफ्टवेयर तथा फार्मास्यूटिकल्स, जो प्रयोक्ता अंश के लगभग 40 प्रतिशत होते हैं, को अपने विचार देने का उचित अवसर नहीं दिया गया है ।

### अधिकारी की स्थिति

9१क१ प्राधिकारी ने वादी द्वारा दिये गए विवरण के अनुसार सभी ज्ञात आयातकों, निर्यातकों और अन्य रुचिबद्ध पार्टियों को आरंभ करने की अधिसूचना, तारीख 18.3.98 भेजी थी । आरंभिक अधिसूचना, सभी संबंधितों की सूचना के लिए भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित की गयी थी । आरंभिक अधिसूचना, बड़े व्यापार एसोसिएशन जैसे फिक्की, सीआईआई, एसोचैम आदि को भी इस अनुरोध के साथ भेजी गयी गयी इसे सभी संबंधितों के लाभ के लिए प्रचारित किया जाए । आरंभिक निष्कर्षों के बाद भी प्राप्त सभी उत्तरों को, अंतिम निश्चयन के लिए विचार में लिया गया है । अतः प्राधिकारी मानता है कि आयातक का तर्क तथ्यों से पुष्ट नहीं है ।

### आयातक द्वारा दिया गया तर्क

10. 16 मछलियों के अवधि को जाँच की अवधि के रूप में माना गया है । 16 मछलियों की अवधि से, सीटिक एसिड की बिक्री में, सीजन की बात के कारण दो पीक अवधियाँ १ अप्रैल-जुलाई शामिल हो गयी हैं, जिससे ऑकड़ों के प्रस्तुतीकरण में भारी खराबी आयी है ।

### प्राधिकारी की स्थिति

10१क१ जैसा कि पहले कहा गया है, प्राधिकारी उचित बिक्री मूल्य, उत्पादन की अधिकतम लागत तथा सामान्यतः स्वीकृत लेखा-सिद्धान्तों के आधार पर विषयगत माल को बनाने और बेचने की लागत पर आधारित मानता है । प्राधिकारी संवित आधार पर क्षति का आकलन करता है और एक अकेला कारक, स्वदेशी उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के संबंध में निर्णयात्मक मार्गदर्शन अनिवार्यतः नहीं दे सकता ।

**आयातक द्वारा दिया गया तर्क**

11. यदि निम्न निर्यात मूल्य के कारण चीन की सरकार द्वारा भारी आर्थिक सहायता दी जाती है, तो यह उसके असाधारण सीमा-शुल्क का मामला हो सकता है, पाटन-रोधी सीमा शुल्क का नहीं।

**अधिकारी की स्थिति**

11(क) वर्तमान मामला, पाटन रोधी नियमावली एवं विनियमों के अंतर्गत जाँचा गया है। पाटन-रोधी सीमा शुल्क, यदि कोई है, नियमों के अनुसार अनुमोदित किया जाता है।

**आयातक द्वारा दिया गया तर्क**

12. यदि सीमा शुल्क लगाया जाता है तो इससे, प्रयोक्ता उद्योग द्वारा प्रयोग किए जाने पर, सीट्रिक एसिड के मूलभूत कच्चे माल की कीमत बढ़ जाएगी। इस प्रकार से ऐसे माल की कीमत निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धा-हीन <sup>हाजारों</sup> जिसमें सीट्रिक एसिड कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया गया है और इस प्रकार देश को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की हानि होगी।

**अधिकारी की स्थिति**

12(क) अधिकारी ने पाया है कि यह तर्क सामान्य प्रकार का है और तथ्यों द्वारा पुष्ट नहीं है। जहाँ कहीं भी आयातित सीट्रिक एसिड कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है, भारतीय निर्यातक वर्तमान निर्यात-संवर्धन योजनाओं को लाभ उठा सकते हैं, निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धी रह सकते हैं।

**आयातक द्वारा दिया गया तर्क**

13. पाटन रोधी सीमा शुल्क लगाया जाना प्रयोक्ताओं के प्रति और आम जनता के प्रति प्रतिकूल होगा क्योंकि इसके लगाए जाने से बल्क ड्रग्स/ फार्मूलेशन के मूल्यों में वृद्धि होगी।

**अधिकारी की स्थिति**

13(क) इस जाँच का विषय, भारत में सीट्रिक एसिड के स्वदेशी उत्पादकों को क्षति और कारणात्मक संबंध और पाटन से संबंधित जाँच विषय-संबंधी नियमों के अधीन जाँच है। जाँच तथा सिफारिशें नियमों के अनुसार की गई हैं।

14. अधिकारी विभिन्न मापों द्वारा समग्र और संचित रूप से स्थापित इस तथ्य पर, कि स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है, क्षति पर अपने आरंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करता है।

15. यह स्थापित करने में कि विषयगत देश से आयातों से स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है, अधिकारी मानता है कि चीन से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के कारण वादी के बाजार हिस्से में कमी आई है। पाटित माल के कारण स्वदेशी उद्योग को अधिक स्टॉक रखना पड़ा है। चीन से सीट्रिक एसिड से निर्यात ने स्वदेशी उद्योग को अपने मूल्य अलाभकारी स्तर तक रखने तथा अपना उचित मूल्य प्राप्त करने से रुकने पर विवश कर दिया जिससे हानियाँ / लाभों में कमी हुई हैं।

#### छ. अंतिम निष्कर्ष

16. उपरोक्त पर विचार करते हुए अधिकारी का विचार है कि :

क। चीन से सीट्रिक एसिड, सामान्य मूल्य से नीचे के मूल्य पर निर्यात किया गया है जिसके परिणामस्वरूप सीट्रिक एसिड का पाटन हुआ है।

ख। स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।

ग। पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध स्थापित हैं।

अधिकारी आरंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करता है और चीन / गणराज्य मूल के या वहाँ <sup>जनपादी</sup> से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद से संबंधित पैरा में यथा विनिर्दिष्ट, अध्याय-29 के अंतर्गत आने वाले सीट्रिक एसिड के आयात पर निश्चित पाटन-रोधी सीमा शुल्क लगाने की सिफारिश करता है। पाटन रोधी सीमा शुल्क, 60324/- रु. प्रति मी. टन एवं प्रति मी. टन आयातों के लैण्डड मूल्य के बीच का अंतर होगा।

17. प्रयोजन के लिए आयातों का लैण्डड मूल्य, कस्टम अधिनियम, 1962 के अधीन कस्टम्स द्वारा निश्चित के अनुसार होगा तथा कस्टम टैरिफ एक्ट, 1975 की धारा 3, 3 ए, 8 बी, 9 तथा 9 ए के अधीन लगाए गए सीमा शुल्क को छोड़कर कस्टम्स के सभी सीमा शुल्क इसमें शामिल होंगे।

18. उपरोक्त के अधीन रहते हुए अधिकारी, तारीख 20.10.98 के आरंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करता है।

19. इस आदेश के विरुद्ध अपील, पूर्ववर्ती अधिनियम के अनुसार कस्टम्स, एक्साईज एण्ड गोल्ड कंट्रोल अपीलीय ट्रिब्यूनल से की जा सकती है।

रति विनय झा, पदनामित प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE****NOTIFICATION**

New Delhi, the 15th March, 1999

**FINAL FINDINGS**

Sub: Anti-dumping investigation concerning import of Citric Acid from  
China PR – Final Findings.

No. 29/1/97/ADD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping duty on Dumped Articles and for determination of injury) Rules, 1995 thereof.

**A PROCEDURE**

1. The procedure described below has been followed subsequent to the preliminary findings:

(a) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified preliminary findings vide notification dated the 20.10.98 with regard to anti-dumping investigations concerning import of citric acid from China PR and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;

(b) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within forty days of the date of the letter;

- (c) The Authority also forwarded a copy of the preliminary findings to the Embassy of the China PR in New Delhi with a request that the exporters and other interested parties may be advised to furnish their views on the preliminary findings;
- (d) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 2.12.98. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any;
- (e) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidences submitted and arguments made by various interested parties. All parties who made request for inspection, in writing, were allowed to inspect the public file;
- (f) Arguments raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt in the preliminary findings and/or these findings;
- (g) In accordance with Rule 16 of the Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on same has been duly considered in these findings;
- (h)\*\*\*\*in this notification represents information furnished by any interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

**B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION**

2. The product involved in the petition is Citric Acid originating in or exported from China PR as specified in para 5 of the preliminary findings.. The product is classified under custom tariff heading 2918.14.

None of the interested parties has raised any argument in respect of product under consideration subsequent to preliminary finding notification and thus the Authority confirms the preliminary findings in this regard..

**C. LIKE ARTICLE**

3. The Authority held in para 6 of preliminary findings that citric acid manufactured by the petitioner and citric acid exported from China RP can be used interchangeably and thus can be substituted technically and commercially and they are “like articles” within the meaning of the rules.

None of the interested parties has raised any argument in this regard subsequent to preliminary finding notification and therefore Authority confirms the preliminary findings in this regard..

**D. DOMESTIC INDUSTRY**

4. The petition has been filed by M/s. Citurgia Biochemicals Ltd. Neville House, JN Heredia Marg, Ballard Estate, Bombay, on behalf of the domestic Industry. It was observed by Authority at

para 7 of the preliminary findings that the petitioner share in total production of industry was about 87% and thus the petitioner has the standing to file the petition on behalf of the domestic industry under the rules.

None of the interested parties has raised any argument in this regard subsequent to preliminary findings notification and thus the Authority confirms the preliminary findings in this regard..

## **E     DUMPING**

5. The rules relating to dumping have already been discussed in the preliminary findings. None of the exporters from China RP submitted any information prior to issuance of preliminary findings notification. The Authority notes that none of the exporters from China RP has furnished further information or disputed the dumping margins calculated by Authority in the preliminary findings.

### **Argument by Importer**

6. Petitioner has not furnished sufficient evidence to arrive at the constructed cost of production and hence its authenticity can not be confirmed. On the basis of invoice dated. 15.6.98 of Chinese exporter and on the basis of information about price in China dated 11.11.98, there is no dumping. Evidence does not exist in respect of export price.

**Authority Position**

- 6(a) The Authority observe that none of Chinese exporters have responded to the questionnaire and submitted information relating to normal value, export price, dumping margin, during investigation. None of the Chinese exporters have submitted any information for the consideration of Authority even subsequent to the Preliminary findings notification. The Authority has, thus, considered Chinese exporters as non-cooperative exporters and proceeded on best available information with the Authority.

It was observed by the Authority in para 8 of the preliminary findings notification that petitioner has not furnished sufficient evidence to arrive at the constructed cost of production and hence its authenticity could not be confirmed. It was further observed that none of the interested parties viz. exporter, importer had contested the method of calculation, or the factual data used in arriving at the cost and therefore in the circumstances, Authority is constrained to rely on the best available information and determine the constructed cost accordingly.

It is observed that none of the Chinese exporters have responded subsequent to the Preliminary findings notification nor have disputed any of the findings of Designated Authority although sufficient opportunities were provided to them. None of the Chinese exporters have represented their case in the oral hearing. The Authority observes that the information submitted by importers on normal price is based on few invoices/quotation, which are dated 15.6.98 and 11/11/98. These dates are beyond the period of investigation which is from April 96 to July 97 and therefore can not be considered. Moreover, the Authority can not determine the normal value on the basis of few invoices or some



other similar information as it is not clear whether the prices at the point of sales are of producer or trader, whether they are at ex-factory level or otherwise, what is the credit period involved, what are the levels and terms of trade and whether they are in the ordinary course of trade or not. To this extent the Authority considers the information as incomplete and therefore the normal value can not be calculated on the basis of incomplete information, It is also observed that importer has now submitted some bill of entries which are dated October 98 and November 98 and requested to calculate the export price accordingly. The Authority observes that these bill of entries relates to period which is beyond the period of investigation and therefore can not be considered. The Authority is thus constrained to rely on the best available information in respect of export price also and confirms the dumping margin at 81.25% of the export price (at ex-factory level) as calculated at para 9 of the preliminary findings..

**F. INJURY & CAUSAL LINK**

**7. (i) Argument by petitioner**

- M/s Bharat Starch Industries Ltd. who have commenced production of citric acid has an internationally sized plant and their cost at optimum level of production is more than the cost of Citurgia which confirms that the latter is running their plant efficiently.
- Total production capacity of Indian citric acid industry i.e. Citurgia together with Bharat Starch is more than adequate to take care of domestic requirement.
- Various economic parameters show that the domestic industry has suffered injury.

**(ii)Argument by importer**

There is no injury to the domestic industry due to the facts that :

- Imports from China were 85% during period of investigation as against 97-98% earlier.
- Other source of supply was selling at nearly the same price when compared to Chinese prices..
- Bharat Starch Industries Ltd. had produced and sold material during the period of investigation which is disregarded by Authority.
- Sales may have been depressed due to entry of M/s Bharat Starch Ltd.
- Increase in imports in later period of investigation is due to seasonability factor.
- Production and capacity utilization were better in period of investigation.
- Cost of production is high in case of petitioner because the plant has a capacity of 6250 MT per annum. The minimum economic size of citric acid plant would be in the region of 20000 MT per annum.
- Growth of domestic industry is not retarded with the start of M/s Bharat Starch Ltd. with a capacity of 20000 MT. per annum.
- There is a gap in demand & supply. The supply from domestic industry can not meet the demand.

- The erosion of margin of profit is due to sharp escalation in the prices of molasses and power tariff and reduction in import duty from 40% to 30%.
- Imposing anti-dumping duty will be detrimental to Indian Industry.
- The petitioner has been unable to control their cost because of their inefficiencies. The production plant of the petitioner is a vintage. Production yields in case of M/s Citurgia are considerably lower as compared to standard norms.
- There is no injury to petitioner on account of holding of closing stocks.
- There is no causal link between the alleged import and injury. Imports are essential.
- The petitioner is a monopoly producer of citric acid and known to employ restrictive/unethical trade practices

#### **Authority Position**

7 (a) The Rules governing injury and various injury parameters have already been discussed in preliminary findings wherein it was held that domestic industry has suffered material injury. The Authority holds that all economic parameters relating to domestic industry need not indicate injury nor one or several of various economic parameters necessarily give decisive guidance with regard to injury suffered by the domestic industry. Examination of the impact of dumped imports on the domestic industry includes evaluation of all relevant economic factors. Cumulative assessment of all relevant factors only could indicate whether the domestic industry has suffered material injury. In case, the domestic industry operates below the optimum level of efficiency its effect is offset, as

injury to domestic industry is assessed on the basis of optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods on the basis of generally accepted accounting principles. The domestic industry is not allowed by Authority to take advantage of its inefficiency if any and pass it on to user industry. Anti-dumping investigations are carried out as per rules and anti-dumping duty is recommended which would be adequate to remove the injury, where applicable, to the domestic industry provided that anti-dumping shall not exceed the dumping margin.

Regarding the argument that other source of supply are selling at the same price when compared to Chinese prices, the Authority observe that these are not alleged as dumped goods by the petitioner.

Regarding the argument relating to comparison of cost of M/s Bharat Starch Industries Ltd. and of petitioner, the Authority observes that these companies use different raw materials and hence it may not be appropriate to compare the cost. Moreover the plant of M/s Bharat Starch is not fully operational and therefore the estimated cost data of Bharat Starch at higher level of productions are not on the basis of actuals. The petitioner, even otherwise, satisfies the condition on standing of domestic industry for the purpose of assessment of injury.

Regarding the argument that there is a gap in demand and supply the Authority observes that by recommending the imposition of anti-dumping duties, the quantum of imports is not restricted in any way. Even after imposition of anti-dumping duties, the user industry can import the subject goods to fill the gap if any in demand and supply. Moreover it is not disputed that M/s Bharat Starch Industries Ltd. shall be producing citric acid with an installed capacity of 20000 MT p.a. which shall be adequate to meet the demand of citric acid in the future. The Authority has already discussed the Indian Industry's Interest and other related issues in para 20 of the preliminary findings wherein it was inter-alia held that the purpose of anti-duties, in general, is to eliminate dumping which is

causing injury to domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country. Therefore the Authority hold that imposition of anti-dumping duty is not detrimental to Indian Industry's interest.

**G. Other Issues**

**Argument raised by petitioner**

8. The floor price of Rs. 58925 per MT fixed for computing the anti-dumping duty on import of citric acid is very much on lower side. Actual usage of raw material should be considered instead of standard norms and the optimum level of capacity utilization.

**Authority position**

8(a) The Authority considers the fair selling price on the basis of optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods on the basis of generally accepted accounting principles.

**Argument raised by importer**

9. Interest of actual user segment has been ignored. Soft drinks and pharmaceuticals, which contribute nearly 40% of the user segment, have not been given an appropriate chance to represent their views.

**Authority Position**

9(a) The Authority had sent initiation notification dt. 18.3.98 to all known importers, exporters and other interested parties as per details furnished by the petitioner. The initiation notification was also published in the Gazette of India for the information of all concerned. Initiation notification was also sent to major business associations like FICCI, CII, Assocham etc. with a request to publicize it for the benefit of all

concerned. All responses received even after the preliminary findings have been taken into account for final determination. Therefore, the Authority considers that the argument of the importer is not substantiated with facts.

**Argument raised by importer**

10. Sixteen months period has been considered as period of investigation. 16 months period of investigation has permitted inclusion of 2 peak periods (April-July) because of seasonability factor in the sale of citric acid which results in drastic distortion of presentation of data.

**Authority position**

10(a). As already stated, the Authority considers the fair selling price on the basis of optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods on the basis of generally accepted accounting principles. The Authority assesses the injury on cumulative basis and a single factor can not necessarily give decisive guidance with regard to injury suffered by domestic industry.

**Argument raised by importer**

11. If heavy subsidies given by Govt of China is the cause of low export price then this may be a case of countervailing duty and not of anti-dumping duty.

**Authority position**

11(a). The instant case has been investigated under the Anti-dumping rules and regulations. Anti-duty if any is recommended as per rules.

**Argument raised by importer**

12. If anti-dumping duty is imposed, it will hike the basic raw material price of citric acid when used by the user industry. In this way, prices of goods wherein citric acid is used as raw material shall be non-competitive in the export market and thus the country will lose valuable foreign exchange.

**Authority Position**

12(a) The Authority finds that the argument is generic in nature and is not substantiated with facts. Wherever imported citric acid is used as a raw material, the Indian exporters can avail of export promotion schemes in existence and thus remain competitive in the export market.

**Argument raised by importer**

13. Levy of anti-dumping duty will be detrimental to the users as well as to the common public, because the levy will result in increase in prices of bulk drugs/formulation.

**Authority Position**

13(a) The subject of this investigation concerns dumping, injury and causal link to the domestic producers of citric acid in India as per the rules on the subject. The investigation and recommendations have been carried out as per the rules.

14. The Authority confirms its preliminary findings on injury that various parameters collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury.

15. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject country, the authority hold

that increase in market share of imports from China resulted in decline in the market share of petitioner. The dumped material forced the domestic industry to hold higher stock. The export of citric acid from China forced the domestic industry to keep its prices to unremunerative levels and prevented it to recover its fair price resulting in losses/decrease in profits.

#### **H. FINAL FINDINGS**

16. The Authority after considering the foregoing concludes that :

- (a) Citric acid has been exported from China RP at a price lower than the normal value resulting into dumping of citric acid.
- (b) The domestic industry has suffered material injury.
- (c) The causal link between dumping and injury is established.

The Authority confirms the preliminary findings and recommends imposition of definitive anti-dumping duties on import of citric acid falling under chapter 29 as specified in the para relating to product under consideration originating in or exported from China RP. The Anti-dumping duty shall be the difference between Rs.60324 Per MT and the landed value of imports per MT.

17. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8 B, 9 and 9 A of the Customs Tariff Act, 1975.

18. Subject to above the Authority confirms the preliminary findings dated 20.10.98.

19. An appeal against this order shall lie to the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act supra.

RATHI VINAY JHA. Designated Authority